12.05 hrs.

Title: Further discussion regarding recent summit-level talks held between India and Pakistan in Agra raised by Shri Mulayam Singh Yadav on 24th July, 2001 (Concluded.)

MR. SPEAKER: Let us take Item No.11. Now, the hon. Prime Minister.

श्री माधवराव सिंधिया (गुना) अध्यक्ष महोदय, मैं एक मामला उठाना चाहता हूं। यदि आपकी इजाजत मिल जाए, तो मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वे मेरी बात सुनने के बाद अपना भााण प्रारंभ करें।

अध्यक्ष महोदय सिंधिया जी, प्रधान मंत्री जी के उत्तर के बाद।

श्री माधवराव सिंधिया (गुना) नहीं, अध्यक्ष महोदय, उनके उत्तर से पूर्व ही इस मामले की ओर आपका ध्यान आकर्ति करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, कल शाम को मैं उपस्थित नहीं था। मेरा हमेशा यह प्रयत्न रहता है कि पार्लियामेंट में वादविवाद का स्तर सदैव बरकरार रहे और उसका स्तर कभी नीचे न गिरे।

कल सम्माननीय विदेश मंत्री महोदय ने अपने भााण में, मेरे भााण, मेरे प्रस्तुतीकरण पर कोई टिप्पणी की, जिस पर मुझे कुछ आपत्ति है। आज के इंडियन एक्सप्रैस में लिखा है कि-

> "Jaswant Singh took exception to Madhavrao Scindia, who during the debate, had referred to the sight of Foreign Minister escorting Kashmir militants to Kandhar as disgraceful उन्होंने मुझे बहुत बड़ी गाली दे दी।"

अध्यक्ष महोदय, उसके बाद उन्होंने मेरे बैकग्राउंड पर भी कुछ टिप्पणी की। मैंने जो अपने भााण में कहा, वह मैंने व्यक्तिगत रूप से जसवन्त सिंह जी के विरुद्ध नहीं कहा। मैं तो आनरेबल फारेन एफेयर्स मिनिस्टर की बात कह रहा था

जहां तक आज का सवाल है, मापदंड आम मतदाता है, आम जनता है और मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे नौ बार जनता का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है और मुझे राज्य सभा के माध्यम से पार्लियामैंट में प्रवेश नहीं करना पड़ता।रू□ज़(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Let me see the record and find out whether it is there or not.

श्री माधवराव सिंधिया : मैंने भााण में जो कहा, वह मैं आपके सामने रखना चाहता हूं।

â€¦ (व्यवधान) मैंने अपने भााण में यह कहा था ---

"But even as the Government ranted and raved about cross-border terrorism, it sent our esteemed hon. Foreign Minister to escort terrorists to their freedom in Kandahar. What an unprecedented spectacle that was. We hung our heads in disbelief and then the hon. Foreign Minister praises the Taliban â€¦"

आपने जो गाली का शब्द इस्तेमाल किया, मेरी इंटैन्शन कभी नहीं थी कि मैं कोई गाली दूं। गाली शब्द कभी पार्लियामैंट में इस्तेमाल हो, मुझे नहीं लगता कि यह उचित है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सम्माननीय विदेश मंत्री के सामने यही प्रस्तुत करना चाहता हूं कि मुझे बड़ा खेद है कि इस शब्द का इस्तेमाल मेरे भाष ाण पर टिप्पणी करते समय किया गया। मेरी कभी इंटैन्शन नहीं रही है, भविय में भी कभी नहीं रहेगी कि किसी भी माननीय व्यक्ति को मैं व्यक्तिगत रूप से कोई गाली दूं। यह शब्द मेरे मुंह से कभी

नहीं निकलेगा और इस तरह की बातें भी नहीं निकलेंगी। मेरा आपसे निवेदन है कि आप रिकार्ड देख लें और अगर यह शब्द रिकार्ड में होगा तो kindly remove it. This is what my request to you is.

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): He should express regret. This is not the way to accuse the Deputy Leader without referring to the actual text of the speech. ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Let me look into the record.

...(*Interruptions*)

THE MINISTER OF RURAL DEVELOPMENT (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): I am a Minister but I am not a Member of this House. I am not joining issue but I only have a request to make. The hon. Member has referred to the Rajya Sabha. The Rajya Sabha has been created by the Constitution of India; former Prime Ministers were elected from the Rajya Sabha. So, I request him to please understand our sentiments also.

SHRI MADHAVRAO SCINDIA : I withdraw that remark. ...(*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI: The hon. Minister of External Affairs should apologise for what he has said.

MR. SPEAKER: Let me go through the records and find out whether that word is there or not.

...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: We have to see what is there on record. Please understand that.

...(*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR: Sir, he has used the word '*gali*'. ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Unless I look into the records, how can I say something?

...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Shri Mani Shankar Aiyar, please sit down.

...(*Interruptions*)

SHRI MANI SHANKAR AIYAR (MAYILADUTURAI): This proves that he does not have the grace to apologise for his remarks. ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Nothing should go on record.

*(Interruptions) â€¦**

MR. SPEAKER: The hon. Prime Minister is going to reply. Please take your seat.

...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Nothing should go on record now.

...(*Interruptions*)

श्री राशिद अल्वी (अमरोहा) अध्यक्ष महोदय, मुज़फफरनगर की हालत पर पहले बहस होनी चाहिए।

â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय आप इस मामले को रिप्लाई के बाद, जीरो आवर में उठा सकते हैं।

*** Not recorded.**

1210 बजे

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, चर्चा में भाग लेने वाले सदस्यों की संख्या लगभग तीस थी। जो सदस्य सदन में उपस्थित नहीं थे, वे भी चर्चा में रूचि रखते थे और जहां थे, वहीं से चर्चा को देखने का प्रयास कर रहे थे, सुनने का प्रयास कर रहे थे। â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, चर्चा का आरम्भ श्री माधव राव सिंधिया ने किया।â€¦ व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : यह गलत है। एक अखबार ने छाप दिया, आप उसी को पढ़ते हैं। सारे अखबार पढ़ते तो पता चल जाता।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मेरा मतलब है कि कांग्रेस की ओर से चर्चा शुरू की। वैसे मुलायम सिंह जी ने चर्चा का आरम्भ किया था और कुछ महत्वपूर्ण बातें कही थीं, लेकिन मैं माधव राव जी के भााण से शुरू करना चाहता हूं, इसलिए कि वे कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ता के रूप में बोले। उनका पहला पैरा, पहला परिच्छेद मैं सदन के सामने रखना चाहता हूं।

> "The Agra Summit has left the country very confused. What is even more discomforting is that even the hon. Prime Minister, the Government and the hon. Minister of External Affairs seem confused. They are not able to resolve this dilemma as to whether this Summit was a success or a failure."

उनके अनुसार सभी असमंजस में हैं, सारा देश भ्रम में है और वे स्वयं भ्रम में हैं, इसका भी उन्होंने परिचय दिया। उस वार्ता के सम्बन्ध में मतभेद हो सकते हैं। जिस उद्देश्य से वार्ता आयोजित की गई थी, वह कहां तक प्राप्त हुआ, लेकिन यह कहना कि सारा देश असमंजस में है, सरकार भ्रम में है, यह ठीक नहीं है। यह देश के साथ और सदन के साथ न्याय करना नहीं है। जिन परिस्थितियों में वार्ता हुई, उनसे सभी परिचित हैं।

यह प्रश्न उठाया गया है कि आपने तैयारी नहीं की थी। इससे पहले लाहौर में एक वार्ता हुई थी, वह वार्ता हमारे दोनों देशों के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उस वार्ता के बाद कारगिल में क्या हुआ, यह एक अलग परिच्छेद है। हम दोनों को जोड़ें, इसकी आवश्यकता नहीं है। अब लाहौर घोाणा की बात सारी दुनिया कहती है, हम भी उसका उल्लेख करते हैं, क्योंकि पाकिस्तान के साथ हमारे सम्बन्धों की जो कड़ी है, उसमें लाहौर वार्ता एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उस वार्ता के बाद में जो अन्तिम घोाणा की गई थी, उसमें आतंकवाद की निन्दा की गई थी। किसी भी प्रकार का आतंकवाद, किसी भी रूप में चलने वाला आतंक वाद, यह आलोचना का विाय था, पाकिस्तान ने इसे स्वीकार किया था। यद्यपि उस समय भी छुटपुट घटनाएं हो रही थीं, लेकिन इसके बाद पाकिस्तान में जो सत्ता परिवर्तन हुआ, उसने सारी तस्वीर बदल दी है। हम पाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल को इस बात के लिए तैयार नहीं कर सके कि अक्रास दि बोर्डर टैरेरिज्म का उल्लेख होना चाहिए। उन्होंने एक कदम आगे बढ़कर उसे स्वतंत्रता की लड़ाई की संज्ञा दे दी। यह हमारे लिए सर्वथा अप्रत्याशित था और उसी समय से वार्ता का वातावरण बिगड़ा।

बार-बार उनसे कहा गया है कि आतंकवाद से समस्याएं हल नहीं होंगी। आतंकवाद दोहरा हथियार है। पाकिस्तान में कुछ ऐसी घटनाएं हो रही हैं, जो आतंकवाद से प्र ोरित हैं। जो वहां की सरकार के लिए कठिनाइयां पैदा कर रही हैं। यहां तक कि जनरल मुशर्रफ को कहना पड़ा कि अगर मेरा बस चले तो इस तरह के आतंकवाद को

मैं गोली से मार दूं। आतंकवाद उनके लिए भी समस्या बन रहा है। इसलिए आतंकवाद को किसी रूप में प्रोत्साहित नहीं किया जा सकता। आतंकवाद न तो आजादी की लड़ाई है और न उसे जेहाद कहा जा सकता है, लेकिन कठिनाई यह है कि पाकिस्तान के साथ हमारे सम्बन्धों में लगातार उतार-चढ़ाव आता रहता है। कभी मित्रता का वातावरण बनता है, कभी युद्ध होता है, कभी युद्ध विराम होता है। यह सिलसिला पिछले 50 साल से चल रहा है। लेकिन हमारी नीति रही है कि हम पड़ौसियों के साथ अपने सम्बन्ध सुधारें, कमजोरी से नहीं।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि पाकिस्तान के जो पत्रकार आए थे, उनमें से कुछ यह कहते सुने गए कि कश्मीर की घाटी हमारी झोली में पके हुए फल की तरह से गिरने वाली है। हिन्दुस्तान की फौज थक गई है। हिन्दुस्तान परेशान हो गया है और इसलिए अब कश्मीर में हिन्दुस्तान अपने हितों की रक्षा के लिए ज्यादा प्रयास नहीं करेगी। किस प्रकार यह भ्रम पैदा हुआ, किस तरह से ये खबरें फैलीं। प्रतिनिधिमंडल आते-जाते रहते हैं। कुछ गैर सरकारी संस्थाएं भी सक्रिय हैं। लेकिन इस तरह के प्रचार ने हो सकता है कि पाकिस्तान के राट्रपति को भी प्रभावित किया हो। अब किसी के मन में गलतफहमी नहीं रहनी चाहिए, भारत सशक्त है, उसकी सेनाएं किसी भी आक्रमण का और किसी भी आंतरिक चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने गलत समझा है। अगर इसके आधार पर उन्होंने अपनी नीती बनाई, रणनीति बनाई, तो इसमें विफल होना बिल्कुल निश्चित था। हम कभी आतंकवाद को स्वीकार नहीं कर सकते हैं। जम्मू-कश्मीर को तो हम अटूट अंग कहते हैं। मैंने जनरल मुशर्रफ से कहा कि आपके लिए जम्मू-कश्मीर जमीन का टुकड़ा हो सकता है। जम्मू तो वे मुश्किल से कहते थे, लद्दाख छोड़ देते थे, कश्मीर पर ध्यान केन्द्रित कर रहे थे और कहते थे कि कश्मीर का जब तक हल नहीं होगा, तब तक हमारे सम्बन्ध सुधरेंगे नहीं। कश्मीर पर भारत हमेशा से बातचीत करने के लिए तैयार रहा है।

'शिमला समझौते' में भी हमने माना था कि जम्मू-कश्मीर के ऊपर आगे बातचीत होगी। हम बातचीत के लिए तैयार हैं और शिखर सम्मेलन में भी कश्मीर के साथ जम्मू-कश्मीर के सवाल को लेकर काफी बातचीत हुई मगर पाकिस्तानी प्रतिनिधि-मंडल को हमने कहा कि अगर आप जम्मू-कश्मीर पर ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं तो फिर जम्मू-कश्मीर के सारे इतिहास को देखना पड़ेगा कि किस तरह से आपने आक्रमण किया था, किस तरह से जम्मू-कश्मीर की जनता को अपनी इच्छा के अनुसार भारत से मिलने से रोका था, किस तरह से क़बाईलियों ने हमला किया। पाकिस्तान जब जम्मू-कश्मीर की बात करता है तो हथियारों की सोचता है और मुझे सुनकर ताज्जुब हुआ। मैं सदन को विश्वास में लेकर यह कहना चाहता हूं कि उन्होंने कहा कि अगर उस समय क़बाईली हमला नहीं करते तो कश्मीर का जो हिस्सा हमारे पास आज है, वह भी न होता। वार्ता का आधार कहां था? इस बात को हम कभी स्वीकार नहीं कर सकते और इसलिए मैंने उनसे बार-बार कहा कि आइए और उन वियों को लेकर संबंध सुधारें।

हमने उन्हें एजेंडा दिया। दो बार हमने एजेंडा दिया, कांफीडेंस बिल्डिंग मैजर्स का ऐलान किया जो एकतरफा था। हमने कहा कि हम इसे लागू करने के लिए तैयार हैं लेकिन आप केवल कश्मीर की रट मत लगाइए। कश्मीर पर बातचीत करने के लिए हम तैयार हैं। बातचीत हम कर रहे हैं, लेकिन कश्मीर का मामला उलझा हुआ है। आपके लिए कश्मीर जमीन का टुकड़ा हो सकता है, हमारे लिए कश्मीर हमारी जिंदगी का हिस्सा है। किस तरह से आतंकवाद की घटनाएं हो रही हैं, किस तरह से निर्दो लोग मारे जा रहे हैं। यह आज़ादी की लड़ाई नहीं है, यह आतंकवाद का नग्न प्रदर्शन है और इसके चलते, स्थिति में परिवर्तन होना मुश्किल है। मैं आशा करता हूं कि पाकिस्तान अपने रवैये पर पुनर्विचार करेगा। मुझे विश्वास है कि वह अपना दृटिकोण बदलेगा। हम लगातार प्रयास करते रहेंगे। मेरे लिए पड़ौसी देशों के साथ मित्रता एक संकल्प का विाय है। 1977 में जब मैं विदेश मंत्री बना था तब भी मैंने प्रयास किया था कि पाकिस्तान के साथ हमारे संबंध सुधरें,, लोगों के आने जाने में आसानी हो, वीज़ा और पासपोर्ट के नियम सरल किये जायें लेकिन बाद में हिंसा का रास्ता पकड़ा गया। पाकिस्तान के एक पत्रकार ने भी इस बात को अनुभव किया है और उन्होंने लिखा हैः आयाज़ अमीर 'डॉन' से संबंधित हैं। उनके लेख का एक अंश मैं उद्धृत करना चाहता हूंः

> "The stark truth is that *jihad* (a term being used loosely here) has no future in Kashmir. This is a harsh thing to say given the blood split and the sacrifices rendered but, unfortunately, all too true. A continuation of the insurgency can bleed India, as it has done with creditable results over the past decade, damage Indian prestige and keep the Valley unsettled. But it cannot secure the liberation of the state. This much should be clear from the history of the last 53 years. What the Pakistan army has failed to secure in full-fledged battle the *jihadis* cannot hope to achieve with their hit-and-run tactics."

यह पाकिस्तान के एक पत्रकार का कहना है। पाकिस्तान, काश्मीर को प्रारम्भ से ही शस्त्रों से लेने का प्रयास करता रहा है। अब उसने देखा कि सेना के बल पर काश्मीर को पाना संभव नहीं है, तो उसने प्रौक्सी-वार का तरीका अपनाया है। आतंकवाद को बढ़ावा दिया है। देश के भीतर उपद्रव हों, इस तरह की योजनायें बनाई जा रही हैं, लेकिन ये तरीके पाकिस्तान के रास्ते को सफल नहीं बनायेंगे। हम शांति का लगातार प्रयास करते रहेंगे. एक प्रक्रिया शुरु हुई है। अगर लाहौर के बाद सत्ता परिवर्तन न होता, तो जो कुछ वहां समझौता हुआ था, उसके आधार पर विभिन्न क्षेत्रों मे हमारे संबंध बढ़ते और काश्मीर पर बातचीत जारी रहती। मुझे काश्मीर के एक बड़े नेता ने कहा था - 53 सालों में जो मामला तय नहीं हुआ, वह इतनी जल्दी तय नहीं होगा। बड़ी सच्चाई से उन्होंने कहा - हम काश्मीर की मांग छोड़ेंगे नहीं और हम जानते हैं, आप काश्मीर छोड़ेंगे नहीं। इसलिए अच्छा यह है कि काश्मीर पर हम बातचीत करते रहें, मगर संबंध बढ़ायें, संबंध सुधारे,, अगर लड़ना है तो गरीबी से, बीमारी से, बेकारी से। दुनिया कहां की कहां पहुंच गई है और हम ऐसे संर्घा में फंसे हैं, जिसका निकट भविय में निपटारा दिखाई नहीं देता है। लेकिन सत्ता परिवर्तन के बाद उन्होंने रास्ता बदला। मुझे याद है श्रीमती गांधी ने कहा था, जब बैठक समाप्त हो रही थी, आप शिमला और लाहौर को ध्यान में रखिए। पाकिस्तान के राट्रपति को शिमला पसन्द नहीं आया था। शिमला का नाम भी शायद उनके मुंह में गलत स्वाद पैदा करता था। उन्होंने शिमला और लाहौर को छोड़कर एक नई शुरुआत करने की कोशिश की। जब संयुक्त घोाणा पत्र तैयार हो रहा था, उनका प्रयास था, इसमें शिमला न आए, इसमें लाहौर का भी उल्लेख न हो। हमने इसे स्वीकार नहीं किया। भारत लगातार पाकिस्तान के साथ संबंध सुधारने का प्रयास करता रहा है। पाकिस्तान से लड़ाई हुई है। लड़ाई में पाकिस्तान को सफलता नहीं मिली। राट्रपति मुशर्रफ ने दिल्ली में कहा था, युद्ध से यह मामला हल नहीं हो सकता है। बातचीत से हल होगा, लेकिन इसके साथ-साथ उन्होंने यह नहीं कहा कि हमने काश्मीर में उपद्रव करने का, काश्मीर को हथियाने का एक नये युद्ध का तरीका निकाला है और उस युद्ध के तरीके से भारत एक बार बात हमारी मान लेगा।

जो बातें वन-टू-वन में हुईं, उन सब पर प्रकाश डालना नहीं चाहता हूं। वे बातें एक दूसरे को विश्वास में लेकर हुई थीं। लेकिन मैंने देखा कि काश्मीर के अलावा और किसी मामले में उनकी रुचि नहीं थी।

हमने कांफीडेंस बिल्डिंग्स मेजर्स ऐलान किया था, आप अगर उसे देखेंगे तो वह भारत और पाकिस्तान के संबंधों को समावेश करने वाला एक दस्तावेज है। उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। चर्चा में यह आवाज उठी थी कि जब पाकिस्तान एजेंडे पर बात करने के लिए तैयार नहीं था तो आपने बातचीत तोड़ क्यों नहीं दी। इस तरह बातचीत न शुरू की जाती है, न तोड़ी जाती है। बातचीत तोड़ कैसे सकते थे और जब सर्वदलीय बैठक हुई, उसमें भी किसी की यह राय नहीं थी कि वे एजेंडे पर सहमत नहीं हो रहे हैं। आप आगरा वार्ता को स्थगित कर दीजिए लेकिन बातचीत का भविय खतरे में पड़ गया, फिर भी कुछ मुद्दों पर सहमति हुई है और हम उसे आगे बढ़ाएंगे। बातचीत का सिलसिला चलेगा लेकिन बातचीत दृढ़ता के आधार पर होगी, देश की अखंडता को सुरक्षित रखते हुए होगी। मैं सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि वार्ता के पहले सर्वदलीय बैठक में सरकार को जो समर्थन मिला, उसके लिए मैं सभी सदस्यों और दलों का आभारी हूं। सम्मेलन की समाप्ति के बाद भी जो बैठक हुई थी उसमें भी स्वर रचनात्मक था, लेकिन अब उस स्वर में थोड़ा सा अंतर आया है, शायद यह राजनीति का पुट है। शायद चुनाव निकट आ रहे हैं, उसका परिणाम है, लेकिन मैं आलोचना का स्वागत करता हूं।

महोदय, कश्मीर का सवाल ऐसा है जिस पर हम सब को मिल कर एक राय बनानी है और दुनिया को यह बताना है कि हमारे मतभेद लोकतांत्रिक हैं। यह मतभेद राष ट्रीय एकता और राट्र की अस्मिता को लेकर नहीं हैं। मणिशंकर जी ने कहा कि वह सरकार की सहायता करने के लिए तैयार हैं। आपको शिखर सम्मेलनों का अनुभव

नहीं है, उन्हें अनुभव है। मैं उनके अनुभव को कम करके नहीं आंकना चाहता, लेकिन उनकी पार्टी उनके अनुभव का ज्यादा लाभ नहीं उठा रही है। जब कभी हम कांग्रेस पार्टी को वार्ता के लिए निमंत्रण देते हैं और सोचते हैं कि मणिशंकर जी से कुछ मुलाकात होगी, दो-दो चोंचें लड़ेंगी तो वह वहां नदारद होते हैं। कांग्रेस का प्रतिनिधि मंडल उन्हें अपने में शामिल नहीं करता। इसके पीछे भी कोई कंफ्यूज़न हो सकता है। मेरे मन में कोई कंफ्यूज़न नहीं है, लेकिन हम भविय में उनकी ओर से वाएं लेना चाहेंगे। वह अनुभवी हैं। जब वह कराची में काम करते थे तब से मैं उन्हें जानता हूं। उन्होंने कहा कि हां, यह मांग हुई थी कि पाकिस्तान से बातचीत शुरू की जाए। शिखर वार्ता शुरू की जाए यह मांग हुई थी, आप शिखर पर चढ़ जाएं, यह मांग नहीं हुई थी। बातचीत तो हो रही थी और बातचीत टूटी, कारगिल के बाद टूटी। सत्ता परिवर्तन हुआ, आफिसरों के स्तर पर मिलना पर्याप्त नहीं था। यह जरूरी था कि जिसके हाथ में पाकिस्तान में सत्ता आ गई है उनका सोचने का तरीका क्या है। वह सचमुच में क्या चाहते हैं। हम मित्रता की बात कर रहे हैं। मित्रता की बात का हमें कितना जवाब मिलेगा, सही जवाब मिलेगा या नहीं मिलेगा। एजेंडा बनाया जाए, उसे लागू किया जाए। इस पर हम लगातार जोर देते रहे। वह एक प्वाइंट का एजेंडा लेकर आए थे, लेकिन मैंने उन्हें समझाया कि कश्मीर का मामला इतना सरल नहीं है। वह आगरा से शुरू करना चाहते थे, हमने कहा कि ताशकंद से यह मामला शुरू है।

कभी हमने वार्ता से इंकार नहीं किया। लेकिन कभी भी हमने डर कर वार्ता नहीं की और कभी हमने प्रचार के लिए वार्ता नहीं की। हम जम्मू-कश्मीर के बारे में बात करने के लिए अभी भी तैयार हैं लेकिन आतंकवाद को छोड़ना पड़ेगा, क्रॉस बोर्डर टैरेरिज्म से हाथ धोने पड़ेंगे। अब फिर आतंकवाद अपना विराट और वीभत्स रूप प्रकट कर रहा है। डोडा में जो कुछ हुआ, क्या यह आज़ादी की लड़ाई है? मुझे बताया गया है कि पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने इसकी निंदा की है। मैं मानता हूं कि पाकिस्तान अगर चाहे तो इन घटनाओं को रोक सकता है और उसे रोकना चाहिए। यह एक कसौटी है। हम मित्रता चाहते हैं यह इसकी कसौटी है।

श्री मुलायम सिंह यादव पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को जो वे दबाए हुए हैं उसके बारे में आपने क्या कहा?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी मैं उसी पर आने वाला था। आप आगे क्या कहने वाले हैं, इसका मैं अंदाज़ लगा लेता हूं।

श्री मुलायम सिंह यादव आप कवि के साथ ज्योतिषी भी हैं, बहुत अच्छी बात है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी मैंने जनरल मुशर्रफ से कहा कि अगर आप कश्मीर का मामला उठाएंगे तो हमें उसके पूरे इतिहास में जाना पड़ेगा। एक-तिहाई कश्मीर जबरदस्ती आपके कब्जे में है। आपने एक हिस्सा चीन को दे दिया और जो हिस्सा आपके पास है उसमें लोकतंत्र नहीं है। आप लोगों की राय जानने की बात करते हैं लेकिन पाकिस्तान में लोगों की राय कहां जानी गयी, जब आपने सत्ता संभाली। इस तरह की खुली बातों की वे आशा नहीं करते थे। यह अच्छा था कि ये बातें मित्रता के वातावरण में हुईं। अब आप कहेंगे कि ऐसा कैसे संभव हो सकता है। कूटनीति में सब कुछ संभव हो सकता है और जो असंभव दिखाई देता है उसको भी हम संभव करके दिखाएंगे। बिना अपने हितों की बलि चढ़ाए हम पाकिस्तान से अपने संबंध सुधारने का प्रयास जारी रखेंगे। इसमें हमें अंतर्राट्रीय समुदाय का समर्थन प्राप्त है। लोग चाहते थे कि हम बातचीत करें। खुद पाकिस्तान के राट्रपति कहते थे कि हम बातचीत के लिए जहां कहें और जिस समय कहें आने के लिए तैयार हैं। देश के भीतर भी आवाजें उठ रही थीं कि बात तो करो। आप उनकी बात मत मानो लेकिन बात तो करो, आप बात क्यों नहीं कर रहे हो। छोटे देशों में यह प्रचार किया गया कि भारत एक शक्ति के रूप में उभर रहा है इसलिए वह अड़ा हुआ है कि हम बात नहीं करेंगे। हमने जब बात न करने का फैसला किया तो उस समय सही फैसला था। कारगिल के तत्काल बाद बातचीत का कोई वातावरण नहीं था। कारगिल में पाकिस्तान परास्त हुआ।(व्यवधान)

श्री अधीर चौधरी (बरहामपुर, पश्चिम बंगाल) क्या अभी वातावरण है?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी नहीं। मैंने उन्हें यह भी बताया कि ताशकंद समझौते से कश्मीर का उल्लेख किया जा रहा है। आपने बात क्यों नहीं की है। उन्होंने कहा कि यही तो मेरी शिकायत है। जो नेता थे वे कश्मीर पर जोर नहीं देते थे। अब मैं आया हूं तो मैं जोर दूंगा। मैंने कहा कि जोर दोगे तो बातचीत की गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी। कश्मीर का मामला इतना आसान नहीं है। यह हमारी भावनाओं से जुड़ा हुआ है। हम दो राट्रों के सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते। पाकिस्तान उसी के आधार पर बना है लेकिन पाकिस्तान बन गया तो हम पाकिस्तान का भला चाहते हैं लेकिन पाकिस्तान अब भारत को आगे तोड़ने का प्रयास न करे। हम इस प्रयास को सफल भी होने नहीं देंगे। कश्मीर के बारे में कांस्टीट्यूएंट असेम्बली ने फैसला किया। पाकिस्तान में तो चुनाव नहीं हुए।

जो गुलाम कश्मीर है, उसकी जनता की आवाज नहीं है। अभी वहां चुनाव हुये थे लेकिन बाद में वहां की सत्ता एक सेनापति को सौंप दी गई। चीन को एक हिस्सा दे दिया। किस अधिकार से दिया? कहा गया, नहीं, अगर हमारा आपका समझौता हो गया तो चीन से हम वह हिस्सा वापस ले लेंगे। मैंने कहा कि इस बात पर कोई भरोसा नहीं करेगा। इसलिये सच्चाई को पहचानिये, यथार्थ को पहचानिये और उन्माद की बात छोड़ दीजिये। आतंक का सहारा मत लीजिये। भारत बड़ा देश है और वह उदार नीतियां अपनाता आ रहा है और आगे भी अपनायेगा। लेकिन उदारता का मतलब यह नहीं कि हम अपने महत्वपूर्ण हितों की रक्षा नहीं करें। हम यह रक्षा करेंगे और रक्षा करते हुये हम संबंध सुधारने का रास्ता निकालेंगे। इस काम में हमें सारे सदन का समर्थन चाहिये।

अध्यक्ष महोदय, प्रचार को लेकर बातें हुई हैं कि ठीक तरह से प्रचार नहीं हुआ। जिस तरह का प्रचार विरोधी कर रहे थे, मेरा मतलब पाकिस्तान या पाकिस्तानियों से है, उस तरह के प्रचार का तरीका हम लोग नहीं अपना सकते थे लेकिन अब लगता है कि इलैक्ट्रोनिक मीडिया के कारण कूटनीति में भी थोड़ा सा परिवर्तन करना पड़ेगा। शिखर सम्मेलन की एक मर्यादा है, उसमें काम करने का एक ढंग होता है जिसमें कदम- कदम पर वक्तव्य नहीं दिये जाते। समाचार-पत्रों को बात लीक कर दी जाये, ऐसा नहीं होता। हम पाकिस्तान के साथ सम्मेलन में गये थे । लाहौर में भी ऐसा नहीं हुआ लेकिन यहां ऐसा लगा कि प्रचार को भी आक्रमण का हथियार बनाया जा रहा है। इसका असर हमारी जनता पर ठीक नहीं हुआ। लोगों ने समझा कि हम बोलते नहीं। मैंने जनरल मुशर्रफ की मौजूदगी में प्रतिनिधिमंडल को वक्तव्य दिया था जिसमें मैंने कहा कि हम आतंकवाद के सामने नहीं झुकेंगे और आतंकवाद को दबाने की हमारी क्षमता को कोई कम न आंके। वे सुन रहे थे। वे नोट्स ले रहे थे लेकिन हमने उसी समय प्रेस को नहीं बताया। हमने कहा कि इन्हें सोचने का मौका दीजिये। मर्यादा का पालन होना चाहिये। हमने दृढ़ता दिखाई और दृढ़ता के साथ शालीनता भी दिखाई। हमने सारी वार्ता में मर्यादा का पालन किया। उसका हमें घाटा भी हुआ जिसके लिये हम भविय में उपयुक्त कदम उठायेंगे। लेकिन इसके कारण हमारा प्रयास विफल हुआ, यह कहने का कोई अर्थ नहीं। समझ-बूझ बढ़ी है। कुछ मुद्दों पर आगे बातचीत चलेगी। कश्मीर पर हम बात करने के लिये तैयार रहेंगे लेकिन हमने अपना दृटिकोण स्पट कर दिया है। उसके साथ-साथ पाकिस्तान को मेल बिठाने की कोशिश करनी पड़ेगी। मुझे विश्वास है कि पाकिस्तान का रवैया बदलेगा।